



दक्षिणामूर्ति शिव साधना परिषद
सत्यम नगर, सामने घाट, लंका ,वाराणसी
221005

दक्षिणामूर्ति स्तोत्रं



आदि गुरु शंकराचार्य जी(जिन्होंने भारत में चार प्रमुख मठों की स्थापना की) उन्होंने भी दक्षिणामूर्ति शिव को अपना गुरु बनाया था।

स्वयं आदि शंकराचार्य जी ने दक्षिणामूर्ति स्तोत्र की रचना करी थी। यह स्तोत्र अद्वैत वेदांत (अद्वैतवाद) दर्शन का संक्षिप्त सारांश प्रस्तुत करता है।

गुरुदेव..ब्रह्म विद्या और वेद-वेदांत के ज्ञाता हैं।

-वे योग विद्या के आदि आचार्य हैं।

-वे ध्यान, मन को नियंत्रित करने और कुंडलिनी शक्ति को जाग्रत करने की सभी गुप्त योग पद्धतियों के स्वामी हैं।

-उन्हें संगीत, सुर, और ताल का देवता माना जाता है।

-वे व्याकरण, तर्कशास्त्र, और सभी लौकिक व अलौकिक विज्ञान के अंतिम प्राधिकारी हैं।

-उनके सीधे हाथ की चिन्मुद्रा अज्ञानता को मिटाकर प्रखर बुद्धि और विवेक प्रदान करती है।

संक्षेप में कहें तो, ज्ञान से लेकर मोक्ष तक गुरुदेव दक्षिणामूर्ति प्रदान करते हैं। गुरुदेव दक्षिणामूर्ति की भक्ति से ब्रह्मांड में कुछ भी अलभ्य नहीं है।



गुरुदेव दक्षिणामूर्ति ध्यानम्

वटवृक्षं महोच्छ्रायं पद्मरागफलोज्ज्वलम्,
 गारुत्मतमयैः पत्रैर्विचित्ररूप शोभितम् ।
 नवरत्न महाकल्पैर्लम्ब-मानैरलंकृतम्,
 विचिन्त्य वटमूलस्थं चिन्तयेल्लोकनायकम् ॥ १ ॥

स्फटिकरजतवर्णं मौक्तिकी मक्षमाला - ममृतकलश विद्याज्ञानमुद्रा कराब्जैः ।
 दधतमुरगकक्षं चन्द्रचूडं त्रिनेत्रम्, विधृत विविधभूषं दक्षिणामूर्तिमीडे ॥ २ ॥

शङ्करं तु शरच्चन्द्र निभम्भोजमध्यगं, गङ्गाधरं शरच्चन्द्र करोल्लासित शेखरम् ।
 प्रसन्नवदनाम्भोजं त्रिनेत्रं सुस्मिताननं, दिव्याम्बरधरं देवं गंधमाल्यैरलंकृतम् ॥ ३ ॥

नानारत्नमयाकल्पमनुकल्प विभूषितं, मुक्ताक्षमालां दक्षोर्ध्वे ज्ञानमुद्रामधः करे ।
 वार्मोर्ध्वे च सुधाकुंभं पुस्तकं तदधः करे, दधानं चिन्तयेद् देवं मुनिवृन्दनिषेवितम्

॥ ४ ॥



प्रथम श्लोक – वटवृक्ष के नीचे विराजमान गुरुदेव

इस श्लोक में सबसे पहले श्री दक्षिणामूर्ति के दिव्य आसन और वातावरण का ध्यान करने को कहा गया है।

एक विशाल और घनी छाया देने वाला वटवृक्ष है। वह साधारण वृक्ष नहीं, बल्कि दिव्य और अलौकिक रूप से सुशोभित है। उसके फल माणिक्य के समान चमकते हैं, पत्ते पन्ने के समान शोभायमान हैं और वह नौ प्रकार के रत्नों से बने सुंदर लटकते हुए अलंकारों से सजा हुआ है।

ऐसे दिव्य वटवृक्ष के नीचे जगत् के गुरु और मार्गदर्शक भगवान दक्षिणामूर्ति विराजमान हैं। साधक को इसी स्वरूप का मन में ध्यान करने के लिए कहा गया है।

द्वितीय श्लोक – गुरुदेव का दिव्य स्वरूप

इस श्लोक में दक्षिणामूर्ति के शरीर और उनके प्रमुख चिह्नों का वर्णन है। उनका शरीर स्फटिक और चाँदी के समान उज्ज्वल है। उनके हाथों में ज्ञान से संबंधित दिव्य चिह्न और वस्तुएँ हैं। वे मोती की माला, अमृत का कलश तथा ज्ञानमुद्रा धारण करते हैं।

उनके शरीर पर सर्प का अलंकार है। सिर पर चन्द्रमा सुशोभित है और उनके तीन नेत्र हैं। वे अनेक प्रकार के दिव्य आभूषणों से अलंकृत हैं। अंत में साधक कहता है कि वह ऐसे भगवान दक्षिणामूर्ति की स्तुति और आराधना करता है।



तृतीय श्लोक – मुखमण्डल और शिवस्वरूप

इस श्लोक में दक्षिणामूर्ति के मुख, मस्तक और शांत भाव को विशेष रूप से बताया गया है।

वे शंकर अर्थात् भगवान शिव के स्वरूप हैं। उनका तेज शरद् ऋतु के निर्मल चन्द्रमा के समान है। उनकी जटाओं में माता गंगा विराजमान हैं और मस्तक पर चन्द्रमा सुशोभित है।

उनका मुख अत्यंत प्रसन्न, शांत और कमल के समान सुंदर है। उनके तीन नेत्र हैं और मुख पर मंद एवं सुंदर मुस्कान है।

वे दिव्य वस्त्र धारण किए हुए हैं तथा सुगंधित द्रव्यों और पुष्पमालाओं से अलंकृत हैं।

चतुर्थ श्लोक – चार भुजाएँ और उनके आयुध

यह श्लोक विशेष रूप से दक्षिणामूर्ति की चार भुजाओं के स्वरूप को बताता है।

वे अनेक प्रकार के रत्नों से बने दिव्य आभूषणों से सुशोभित हैं। उनकी भुजाओं में ज्ञान और अमृत से संबंधित प्रतीक हैं।

इसमें स्पष्ट रूप से बताया गया है कि:

ऊपरी दाहिने हाथ में – ज्ञानमुद्रा

ऊपरी बाएँ हाथ में – अमृत का कलश

नीचे वाले हाथ में – पुस्तक/शास्त्र

और अंत में साधक को ऐसे भगवान दक्षिणामूर्ति का ध्यान करने के लिए कहा गया है, जिनकी सेवा एवं उपासना मुनियों और ऋषियों का समूह कर रहा है।



श्रीदक्षिणामूर्ति स्त्रोत्रम्

विश्वं दर्पण दृश्यमान नगरी तुल्यं निजान्तर्गतं
पश्यन्नात्मनि मायया बहिरिवोद्भूतं यथा निद्रया।
यः साक्षात्कुरुते प्रबोध समये स्वात्मान मेवाद्वयं
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥ १ ॥

जो अपने हृदयस्थित दर्पण में दृश्यमान नगरी-सदृश विश्व को
निद्रा द्वारा स्वप्न की भाँति माया द्वारा बाहर प्रकट हुये की तरह
आत्मा में देखते हुए ज्ञान होने पर अथवा निद्रा भंग होने पर
अपने अद्वितीय आत्मा का साक्षात्कार करते हैं, उन श्रीगुरु
स्वरूप श्रीदक्षिणामूर्ति को यह मेरा नमस्कार है ॥ १ ॥

बीजस्यान्तरिवान्कुरो जगदिदं प्राडनिर्विकल्पं पुन-
र्माया कल्पित देशकालकलना वैचित्र्य चित्रीकृतम्।
मायावीव विजृम्भयत्यपिमहायोगीव यः स्वेच्छया
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥ २ ॥

जिन्होंने महायोगी की तरह अपनी इच्छा से सृष्टि के पूर्व
निर्विकल्परूप से स्थित इस जगत को बीज के भीतर स्थित



अंकुर की भाँति माया द्वारा कल्पित देश, काल और धारणा की विचित्रता से चित्रित किया है तथा मायावी-सदृश जँभाई लेते हुए-से दिखते हैं, उन श्रीगुरु स्वरूप श्रीदक्षिणामूर्ति को यह मेरा नमस्कार है ॥ २ ॥

यस्यैव स्फुरणं सदात्म कमसत्कल्पार्थकं भासते
साक्षात् तत्त्वमसीति वेदवचसा यो बोध यत्याश्रितान्।
यत्साक्षात्करणाद्धवेन पुनरा वृत्तिर्भवाम्भोनिधौ
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥ ३ ॥

जिसका सदात्मक स्फुरण ही असत्-तुल्य भासित होता है, जो अपने आश्रितों को 'साक्षात् तत्त्वमसि' अर्थात् 'तुम साक्षात् वही ब्रह्म हो' इस वेद-वाक्य द्वारा ज्ञान प्रदान करते हैं तथा जिनका साक्षात्कार करने से पुनः भवसागर में आवागमन नहीं होता, उन श्रीगुरु स्वरूप श्रीदक्षिणामूर्ति को यह मेरा नमस्कार है ॥ ३ ॥

नाना छिद्रघटोदरस्थित महा दीपप्रभा भास्वरं
ज्ञानं यस्य तु चक्षुरादि करणद्वारा बहिः स्पन्दते।
जाना मीति तमेव भान्त मनुभात्येतत् समस्तं जगत्
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥ ४ ॥



अनेक छिद्रों वाले घड़े के भीतर स्थित विशाल दीपक को उज्ज्वल प्रभा के समान ज्ञान जिनके नेत्र आदि इन्द्रियों द्वारा बाहर प्रसरित होता है तथा जैसा मैं समझता हूँ कि उसी के प्रकाशित होने पर यह सम्पूर्ण जगत प्रकाशित होता है, उन श्रीगुरु स्वरूप श्रीदक्षिणामूर्ति को यह मेरा नमस्कार है ॥ ४ ॥

देहं प्राण मपीन्द्रियाण्यपि चलां बुद्धिं च शून्यं विदुः
स्त्री बालान्ध जडोपमास्त्वहमिति भ्रान्ता भृशं वादिनः ।
माया शक्ति विलास कल्पित महाव्यामोह संहारिणे
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥ ५ ॥

भ्रमित हुए बहुवादी-शून्यवादी बौद्ध आदि देह, प्राण, इन्द्रियों को तथा तीव्र बुद्धि को भी बालक, अंध और जड़ की तरह शून्य मानते हैं तथा 'अहं' को ही प्रधानता देते हैं, ऐसे माया शक्ति के विलास से कल्पित महामोह का संहार करने वाले उन श्रीगुरु स्वरूप श्रीदक्षिणामूर्ति को यह मेरा नमस्कार है ॥ ५ ॥



राहुग्रस्त दिवाकरेन्दु सदृशो माया समाच्छादनात्
 सन्मात्रः करणोप संहरणतो योऽभूत् सुषुप्तः पुमान् ।
 प्रागस्वाप्समिति प्रबोध समये यः प्रत्यभिज्ञायते
 तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥ ६ ॥

जो पुरुष राहु द्वारा ग्रस्त सूर्य-चन्द्र के समान माया द्वारा
 समाच्छादित होने के कारण सन्मात्र का इन्द्रियों द्वारा उपसंहार
 करके सो गया था, उसे निद्रा में लीन होने पर अथवा जागने के
 पश्चात् जो प्रत्यभिज्ञातुल्य भासित होता है, उन श्रीगुरु स्वरूप
 श्रीदक्षिणामूर्ति को यह मेरा नमस्कार है ॥ ६ ॥

बाल्यादिष्वपि जाग्रदादिषु तथा सर्वास्ववस्थास्वपि
 व्यावृत्तास्वनुवर्तमान महमित्यन्तः स्फुरन्तं सदा ।
 स्वात्मानं प्रकटी करोति भजतां यो मुद्रया भद्रया
 तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥ ७ ॥

जो अपने भक्तों के समक्ष भद्रामुद्रा द्वारा बाल, युवा, वृद्ध, जाग्रत्,
 स्वप्न, सुषुप्त तथा सभी व्यावर्तित अवस्थाओं में भी अनुवर्तमान
 एवं सदा 'अहं' रूप से अन्तःकरण में स्फुरमाण स्वात्मा



को प्रकट करते हैं, उन श्रीगुरु स्वरूप श्रीदक्षिणामूर्ति को यह मेरा नमस्कार है ॥ ७ ॥

विश्वं पश्यति कार्यकारणतया स्वस्वामि सम्बन्धतः
शिष्याचार्य तया तथैव पितृपुत्रा द्यात्मना भेदतः ।
स्वप्ने जाग्रति वा य एष पुरुषो मायापरिभ्रामितः
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥ ८ ॥

जिनकी माया द्वारा परिभ्रमित हुआ यह पुरुष स्वप्न अथवा जागृत-अवस्था में विश्व को कार्य-कारण, स्वामी-सेवक, शिष्य-आचार्य तथा पिता-पुत्र के भेद से देखता है, उन श्रीगुरु स्वरूप श्रीदक्षिणामूर्ति को यह मेरा नमस्कार है ॥ ८ ॥

भूरम्भांस्य नलोऽनिलोऽम्बर महर्नाथो हिमांशुः पुमान्
नित्याभाति चराचरात्म कमिदं यस्यैव मूर्त्यष्टकम्।
नान्यत्किञ्चन विद्यते विमृशतां यस्मात्परस्माद्विभो-
स्तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥९॥



जिनकी पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा
और पुरुष - ये आठ मूर्तियाँ ही इस चराचर जगत के रूप में
प्रकाशित हो रही हैं तथा विचारशीलों के लिये जिन परापर विभु
के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है, उन श्रीगुरु स्वरूप
श्रीदक्षिणामूर्ति को यह मेरा नमस्कार है ॥९॥

सर्वात्मत्वमिति स्फुटीकृत मिदं यस्माद मुष्मिन् स्तवे
तेनास्य श्रवणात् तदर्थमननाद्ध्यानाच्च संकीर्तनात् । सर्वात्मत्व
महाविभूतिसहितं स्यादीश्वरत्वं स्वतः
सिध्येत् तत्पुनरष्टधा परिणतं चैश्वर्यमव्याहतम् ॥ १० ॥

यह चराचर जगत सर्वात्म स्वरूप है, इस लिये इसका श्रवण,
इसके अर्थ का मनन, ध्यान और संकीर्तन करने से स्वतः सर्वात्म
स्वरूप महाविभूति सहित ईश्वरत्व की प्राप्ति होती है। पुनः आठ
रूपों में परिणत हुआ स्वच्छन्द ऐश्वर्य भी सिद्ध हो जाता है ॥१०॥

॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं श्रीदक्षिणामूर्तिस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

जय दक्षिणामूर्ति शिव गुरुदेव 🙏🌹

For more information on spiritual content follow our channel and page -tap on icon/link:

अध्यात्म से जुड़ी अधिक जानकारी के लिए icon/link पर क्लिक करें और चैनल को फॉलो करें।

CLICK HERE



YouTube

<https://m.youtube.com/@ShriDakshinaMurtiShivSadhanaPa>



<https://whatsapp.com/channel/0029VazNzZhEquiGjJjCVV17>



https://www.instagram.com/dakshinamurtishiv?utm_source=wa4a&utm_campaign=wa_vpl_m2_uvfvweb



<https://www.facebook.com/sanjay.towardhimaharaj/>



<https://t.me/dakshinamurtishiv>

जो महानुभाव कुछ दिन या आजीवन रहकर ज्योतिष, ध्यान इत्यादि विभिन्न प्रकार की साधनाएं सीखना चाहते हैं या परिवार से दूर भगवान की भक्ति में जीवन बिताना चाहते हैं, उनके लिए रहना-खाना निःशुल्क है।

सम्पर्क करें:-

ज्योतिषाचार्य संजय तिवारी जी महाराज

दक्षिणामूर्ति शिव साधना परिषद,

सत्यम नगर, सामने घाट, लंका, वाराणसी 221005

मोबाइल: 8887813241

8660820545

जो लोग गुरुदेव दक्षिणामूर्ति शिव से दीक्षा लेना चाहते हैं, वे सभी संपर्क कर सकते हैं।

Dakshinamurti Shiv Sadhana Parishad Varanasi

Dakshinamurti Shiv Sadhana Parishad Varanasi